بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Ph:+91-1872-220186, Fax:+91-1872-224186, Mob.98150-16879, E-Mail:ansarullah@qadian.in

.Mob:9682536974, Khulasa khutba of 04.07.25

मक्का पर सैन्य अभियान के हवाले से आँहुज़ूर ﷺ के जीवन परिचय का ईमान वर्धक वर्णन।

सारांश ख़ुत्ब: जुमः

सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ि,

यू.के., स्थान मस्जिद मुबारक,बयान फर्मूदः 04 जौलाई 2025

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया– मक्का पर विजय के अंतर्गत मक्के में दाख़िल होने की स्थिति का वर्णन गत ख़ुत्बे में हुआ था, उसके आगे का विवरण इस प्रकार है- इब्ने इस्हाक़ ने लिखा है कि अबू सुफ़यान ख़ुदा तआला की सेनाओं का अवलोकन करके वापस पहुँच गया। आँहज़रत ﷺ अपने हरे पोशाक वाले दल के साथ आए। इब्ने सअद ने लिखा है कि आप स. अपनी क़सवा नामक ऊँटनी पर हज़रत अबू बकर रज़ी. और उसैद बिन हज़ीर रज़ी. के बीच में थे। रसूलुल्लाह आँहज़रत ﷺ उस समय सूरः फ़ातिहः पढ़ रहे थे। जब आप स. मक्का में दाख़िल हुए तो लोग आप स. के दर्शन के लिए आए। विनय शील अस्तित्व के कारण आप स. का सिर अपनी ऊँटनी के कजावे को छू रहा था। आप स. ने काले रंग की पगड़ी बाँध रखी थी, आप स. का झंडा भी काले रंग का था। आँहज़रत ﷺ ये वाक्य बोल रहे थे- اَللّٰهُمَّ اِنَّ الۡعَيۡشَ الۡاٰخِرَةِ ऐ अल्लाह! निःसंदेह वास्तविक जीवन तो आख़िरत का जीवन है। न्याय एवं सहानुभूति का एक अन्य आयाम यह था कि आप स. ने अपने पीछे स्वंय द्वारा स्वतंत्र किये हुए एक सेवक हज़रत ज़ैद बिन हारसा रज़ी. के बेटे उसामा बिन ज़ैद रज़ी. को बिठाया हुआ था। आप स. 20 रमज़ानुल मुबारक को मक्के में दाख़िल हुए, उस समय सूर्य उदय होकर कुछ ऊपर आ चुका था।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि यह शैली जो ख़ुदा तआला के विशेष बन्दों को दी जाती है वह विनयता के रंग में होती है और शैतान की शैली अहंकार में लिप्त थी। देखो! हमारे नबी करीम ﷺ ने जब मक्का पर विजय प्राप्त की तो आप स. ने उसी तरह अपना सिर झुकाया एवं सजदा किया जिस तरह पर उन कष्टों एवं कठिनाइयों के दिनों में झुकाते थे तथा सजदे करते थे जब उसी मक्का में आप स. का विरोध किया जाता एवं दुःख दिया जाता था। जब आप स. ने देखा कि मैं किस स्थिति में यहाँ से गया था और किस स्थिति में अब आया हूँ, तो आप स. का दिल ख़ुदा तआला के शुक्र से भर गया और आपने ख़ुदा तआला के समक्ष सजदा किया।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं कि जब आप स. मक्का में दाख़िल हुए तो लोगों ने आप स. से पूछा कि आप स. कहाँ ठहरेंगे? आप स. ने फ़रमाया कि क्या अक़ील ने हमारे लिए कोई मकान छोड़ा भी है? अर्थात, मेरे परिजनों एवं रिश्तेदारों ने मेरी पूरी सम्पत्ति बेच खाई है। फिर फ़रमाया कि हम खैफ़ बनी कनाना में ठहरेंगे। यह मक्के का एक मैदान था जहां कुरैश एवं बनी कनाना ने मिलकर क़समें खाई थीं कि जब तक बनू हाशिम तथा बनू अब्दुल मुत्तलिब मुहम्मद (ﷺ) को पकड़ कर हमारे हवाले न कर दें और उनका साथ न छोड़ दें, हम उनके साथ न शादी ब्याह करेंगे और न ही लेन-देन करेंगे।

आप स. ने दिन का कुछ भाग अपने विश्राम गृह में व्यतीत किया, फिर आप स. ने अपनी ऊँटनी क़सवा को मंगवाया और हथियार लेकर एवं कवच पहन कर ऊंटनी पर सवार हुए। आप स. के साथ हज़रत अबू बकर रज़ी. थे और आप स. उनके साथ बातें कर रहे थे।

हुज़ूर ﷺ जब मक्के में दाख़िल हुए तो ख़ाना कअबा के आस पास 360 मूर्तियाँ लगी हुई थीं हुब्ल की मूर्ती उनमे सबसे बड़ी थी। आप स. के हाथ में कमान थी। आप स. जब किसी बुत के पास से गुज़रते तो बुत की आँख में अपनी कमान मारते और फ़रमाते- جَاءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ ۚ إِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوقًا अर्थात, सत्य आ गया तथा असत्य भाग गया तथा निःसन्देह असत्य तो भागने के लिए ही है। आप स. ख़ाना कअबा के पास पहुँच गए और उसे देखा, फिर आप स. अपनी सवारी के साथ आगे बढ़े और अपनी छड़ी से हिजरे अस्वद (पवित्र काला पत्थर) को स्पर्श किया तथा अल्लाहु अकबर कहा। मुसलमानों ने भी नारा ए तकबीर लगाए, यहाँ तक कि मक्के का वातावरण नारा ए तकबीर के नारों से गूँज उठा और आप स. ने सहाबियों को रोका। काफ़िर लोग पहाड़ पर से यह दृश्य देख रहे थे। आप स. ने बैतुल्लाह की परिक्रमा की। हज़रत मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ी. ने आप स. की ऊंटनी की नकेल पकड़ी हुई थी। आप स. अपनी सवारी से उतर आए। एक कथन इस प्रकार है कि हुज़ूर ﷺ ने हज़रत उमर रज़ी. को आदेश दिया कि वे ख़ाना ए काबा में जाएं और उसमे मौजूद हर चित्र को मिटा दें। जब तक ख़ाना काबा से हर एक चित्र को न मिटा दिया गया, आप स. उसमें दाख़िल नहीं हुए। आप स. मक़ाम ए इब्राहीम पर आए और दो रकअत अदा कीं, फिर आप स. ज़म-ज़म के पास तशरीफ़ ले गए, हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ी. अथवा हज़रत अबू सुफ़यान बिन हारिस बिन मुत्तलिब रज़ी. ने एक डोल आप स. के लिए निकाला। आप स. ने उस पानी को पिया और उससे वज़ू किया।

सहाबा रज़ी. जल्दी जल्दी आप स. के वज़ू का पानी अपनी हथेलियों पर लेने लगे। सहाबा वह पानी अपने चेहरों पर डाल रहे थे। काफ़िर लोग यह दृश्य देख रहे थे, वे चकित होकर कहने लगे कि

हमने इतने बड़े बादशाह के बारे में न सुना है और न देखा है।

जब हुबल नामक बुत को गिराया गया तो हज़रत ज़ुबैर बिन अलअवाम रज़ी. ने अबू सुफ़यान से कहा कि हुबल को गिरा दिया गया है, तुम हुबल का नाम लेकर ओहद के दिन बड़े घमंड से दावे कर रहे थे। अबू सुफ़यान ने कहा- ऐ इब्ने अवाम! अब इन बातों को जाने दो, क्यूंकि मैंने जान लिया है कि यदि मुहम्मद (ﷺ) के ख़ुदा के अतिरिक्त भी कोई पूज्य होता तो वह न होता जो आज हुआ है।

इसके बाद आँहज़रत ﷺ ख़ाना ए कअबा के एक कोने में बैठ गए और लोग आप स. के चारों ओर जमा थे। हज़रत अबू बकर रज़ी. इस अवसर पर तलवार सोंते हुए आप स. के साथ खड़े थे। हुज़ूर ﷺ ने उसमान बिन तल्हा रज़ी. को बुलाया और फ़रमाया कि मेरे पास ख़ाना कअबा की चाबी लाओ। वे अपनी माता जी के पास गए तो उसने चाबी देने से इन्कार कर दिया। हज़रत उसमान बिन तलहा रज़ी. ने उससे कहा कि यदि तुम चाबी नहीं दोगी तो यह तलवार मेरी पीठ के आर पार होगी। इस प्रकार उनकी माता जी ने चाबी दे दी। वे चाबी लेकर आँहज़रत ﷺ के पास आए तो आप स. ने चाबी उन्हें वापस दे दी, और उन्होंने दरवाज़ा खोला। आँहज़रत ﷺ उसामा बिन ज़ैद रज़ी. तथा बिलाल बिन रबाह रज़ी. को साथ लेकर ख़ाना ए कअबा के भीतर तशरीफ़ ले गए। ख़ाना ए कअबा की चाबी का धारक उसमान बिन तल्हा रज़ी. भी साथ था। आप स. ने काबे का दरवाज़ा बंद कर दिया और देर तक अन्दर रहे और वहाँ दो रक्अत नमाज़ अदा की।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि यह बात सम्पूर्ण ह्रदय के साथ याद रखो के जैसे बैतुल्लाह में हिजरे अस्वद पड़ा हुआ है, उसी प्रकार क़ल्ब (चेतना) छाती में पड़ा हुआ है। बैतुल्लाह पर भी एक युग ऐसा आया था कि वहाँ काफ़िरों ने मूर्तियाँ रख दी थीं, सम्भव था कि यह युग बैतुल्लाह पर न आता, किन्तु नहीं! अल्लाह तआला ने इसको एक उदाहरण के रूप में रखा। मनुष्य की चेतना भी एक हिजरे असवद की भांति है तथा उसकी छाती भी एक बैतुल्लाह के समान है। अल्लाह के अतिरिक्त अनेक विचार वे बुत हैं जो इस कअबे में रखे गए हैं। मक्का मुअज़्ज़माँ के बुतों को उस समय ध्वस्त किया गया था जब हमारे रसूले करीम ﷺ दस हज़ार दिव्य आत्माओं की सेना के साथ वहाँ प्रकट हो गए थे, तथा मक्का पर विजय प्राप्त कर ली थी। उन दस हज़ार सहाबियों को पूर्व पुस्तकों में फ़रिश्ते लिखा है, और वास्तव में उनका वैभव फरिश्तों के जैसा ही था। मानव शक्तियां भी एक प्रकार से फरिश्तों जैसा ही स्तर रखती हैं, क्यूंकि जैसे फ़रिशतों की यह शान है कि يَفْعَلُوْنَ مَا يُؤ مَرُوْن उसी प्रकार मानव शक्तियों की यह विशेषता है कि जो आदेश दिया जाए, उसका अनुसरण करती हैं।

मक्का पर विजय प्राप्त करने के अवसर पर आप स. ने क़ुरैश से फ़रमाया कि ऐ क़ुरैश! तुम क्या समझते हो कि मैं तुमसे क्या व्यवहार करूंगा। क़ुरैश ने कहा आप जो कुछ करेंगे अच्छा ही करेंगे, आप प्रतिष्ठावान भाई हैं तथा आदरणीय भाई के बेटे हैं। आप स. ने फ़रमाया कि जाओ तुम सब आज़ाद हो। लोग क्षमा का सन्देश सुनकर इस तरह निकले, जैसे उसी समय क़ब्रों से निकले हों और उन्होंने इस्लाम क़ुबूल करना शुरू कर दिया।

हज़रत मसीह मौऊद अलै. फ़रमाते हैं कि ..... सारे काफ़िरों को बंदी बनाकर आप स. के समक्ष पेश किया गया तो काफ़िरों ने स्वंय अपने मुंह से उस समय स्वीकार किया कि हम अपने

अपराधों के कारण वध किए जाने चाहिएं, तथा स्वंय को आपकी दयाशीलता के हवाले करते हैं, तो आप स. ने सबको क्षमा कर दिया। हुज़ूर अलैहिस्सलाम एक अन्य स्थान पर फ़रमाते हैं- यद्यपि यदि उनको दंड दिया जाता तो यह भी न्याय संगत एवं निष्पक्ष होता, किन्तु आप स. ने उस समय अपनी क्षमा शीलता एवं करूणा का नमूना दिखाया। ये वे बातें थीं कि चमत्कारों के अतिरिक्त सहाबियों पर प्रभाव डालने वाली थीं, इस कारण से आप स. अपने नाम के अनुसार मुहम्मद हो गए थे (ﷺ)। आप अलै. फ़रमाते हैं कि जब तक इंसान इस प्रकार के आचरण अपने अन्दर पैदा नहीं करता, कोई लाभ नहीं होता, अल्लाह तआला से प्रेम सम्पूर्ण रूप में मनुष्य अपने भीतर उत्पन्न नहीं कर सकता जब तक नबी करीम ﷺ के शुभ नैतिक आचरण तथा व्यवहार को अपना नेतृत्व एवं मार्ग दर्शक न बना ले, اللھم صلی علی محمد وعلی اٰل محمد

हुज़ूर ने फ़रमाया की शेष वृत्तांत बाद में बयान करूंगा।

अन्त में हुज़ूरे अनवर ने सय्यदा लुबना अहमद साहिबा पत्नी सय्यद मौलूद अहमद साहब का सदवर्णन फ़रमाया, जो साहिबज़ादी अम्तुल हकीम बेगम साहिबा और सय्यद दाऊद मुज़फ्फ़र शाह साहब की बहू थीं। फ़रमाया- इनका निकाह हज़रत ख़लीफ़ातुल मसीह सालिस रह. ने पढ़ाया था और नसीहत करते हुए फ़रमाया था कि विवाह के रिश्ते वृक्ष के पेवंद के समान होते हैं जिन्हें शुरू में बड़ा संभाल कर रखना पड़ता है। क़ुरआने करीम के निर्देशानुसार इस पेवंद को क़ौले सदीद के धागों से बांधना पड़ता है तब जाकर इसकी रक्षा होती है और इसका दायित्व न केवल पति पत्नी पर है बल्कि उनके परिवारों पर, उनके परिजनों पर, बल्कि उनके दोस्तों पर भी होता है क्यूंकि अनेक बिगाड़ कुधारणाओं के परिणाम स्वरूप अथवा चुग़लियों के कारण या असंतोष के कारण या क्रोध के कारण पैदा हो जाते हैं, और उनको रोकने के लिए क़ौले सदीद एक अत्यन मज़बूत धागा है।

हुज़ूरे अनवर अय्यदहुल्लाह ने फ़रमाया- मैं कह सकता हूँ, क्यूंकि रिश्तेदारी भी थी, कि हज़रत ख़लीफ़ातुल मसीह सालिस रह. के इन शब्दों को मोहतरमा लुबना साहिबा ने अपने सम्बन्धों के हक़ में निर्वाह करने की कोशिश की, संभालने का प्रयास किया। हुज़ूर ने फ़रमाया- ये मेरी पत्नी की भाभी भी थीं।

इसी प्रकार हुज़ूरे अनवर ने मुकर्रमा नाज़मून बी बी ज़ुबैर साहिबा पत्नी मुहम्मद शफ़ी ज़ुबैर साहब आफ़ जर्मनी का भी सदवर्णन फ़रमाया तथा जनाज़े की नमाज़ ग़ायब पढ़ाने की घोषणा फ़रमाई और दोनों की मग़फ़िरत एवं दर्जो की बुलंदी के लिए दुआ की।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔

عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम, सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक- 9781831652

18001032131-टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत, पंजाब